हिलोरें लेती चिति, सूर्योदय से सूर्यास्त तक

श्रीगुरुमाई के जन्मदिन महोत्सव का वृत्तान्त

२४ जून, २०१८

श्री मुक्तानन्द आश्रम

भाग ९

गुरुमाई जी के जन्मदिन महोत्सव २०१८ के प्रतिभागियों द्वारा

निस्सन्देह प्रेम

गुरुमाई जी ने हम सभी से पूछा, "प्रेम क्या है?"

कुछ क्षणों के लिए, इस प्रश्न को वातावरण में ही ठहरने देने के बाद गुरुमाई जी ने कहा, "प्रेम के बारे में कौन बताना चाहेगा?"

तत्काल ही कुछ हाथ खड़े हो गए। लोग बताने के लिए उत्सुक थे! जब गुरुमाई जी ने यह देखा तो उन्होंने सायंकालीन आरती के सूत्रधार, स्वामी ईश्वरानन्द से कहा कि वे लोगों को अपने विचार याद करने व बताने से पूर्व चिन्तन करने के लिए आमन्त्रित करें।

जब हमने प्रेम पर मनन किया कि उसका हमारे लिए क्या अर्थ है, हम दूसरों से प्रेम के बारे में क्या कहना चाहते थे, तब कुछ अद्‌भुत घटा। हम अपने प्रेम से और अधिक ठोस रूप से, और भी अधिक जागरूक होकर जुड़ने लगे। आज पूरे दिन हम इस प्रेम को और अधिक स्पष्टता से महसूस कर सकते थे, हम इसे स्पर्श कर सकते थे। यह इतना सजीव था कि हम इसका चित्रण कर सकते हैं — एक दिव्य हस्त द्वारा निर्देशित किसी फुलझड़ी की भाँति वायुमण्डल में हिलोरें लेते हुए, स्पन्दित होते हुए।

कुछ क्षण चिन्तन करने के पश्चात्, स्वामी जी ने हमें अपने अनुभव बाँटने के लिए आमन्त्रित किया।

"सर्वप्रथम जब मैं श्री मुक्तानन्द आश्रम आई, और परिसर में सब ओर गई तब मैंने हरेक को, ये सब कार्य करते हुए देखा, वे सभी बहुत खुश थे। उन सभी के चेहरे दमक रहे थे, वे प्रेम से भरे हुए थे। मैंने भी अत्यन्त प्रेम का अनुभव किया। मैंने स्वयं से कहा, "'मैं और अधिक सेवा करना चाहती हूँ।' तो मेरे लिए सेवा अर्पित करना, प्रेम है।"

"दो दिन पूर्व, मेरी तीन साल की बेटी गुरुमाई जी से, मिले एक कार्ड को पढ़ने का अभिनय कर रही थी। उसे अभी पढ़ना नहीं आता है। तो मैंने पूछा, "कार्ड में क्या लिखा है?" और उसने कहा, "मैं तुमसे प्रेम करती हूँ। तुम्हारे हृदय में प्रेम है।"

"आज जब हम नामसंकीर्तन की माला गा रहे थे, मुझे अपने पूरे शरीर में प्रेम महसूस हुआ, मेरी नसों में बहता प्रेम हॉल में बैठे प्रत्येक व्यक्ति से आता हुआ प्रेम। ऐसा लगा मानो वह आकाश में व संसार भर में तीव्र गति से प्रसरित हो गया हो—हर जगह बस प्रेम ही प्रेम।

"मैं सिद्धयोग पथ पर ही पला-बढ़ा हूँ। सिद्धयोग पथ के प्रति यह मेरे माता-पिता का प्रेम व वचनबद्धता है जिसके परिणामस्वरूप आज मेरे अन्दर भी इस पथ के लिए वही वचनबद्धता है। मुझे लगता है कि यह सचमुच सुन्दर बात है कि उनके प्रेम के कारण ही मैं भी इस प्रेम का अनुभव कर पाया हूँ।"

यह अनुभव सुनने पर गुरुमाई जी ने कहा, "प्रेम, प्रेम को कई गुणा बढ़ा देता है।"

"प्रेम असम्भव को सम्भव बना देता है।"

गुरुमाई जी ने आगे कहा, "प्रेम ने आज के महोत्सव को सम्भव बनाया।"

"जब आज सुबह के सत्संग में मैंने कैनी वार्नर को उनका गीत बजाते सुना तो उनके संगीत में मैंने बहुत प्रेम का अनुभव किया। उनका बजाना, प्रेम का मूर्तरूप था। मेरी आँखों में आँसू आ गए थे।"

इस पर गुरुमाई जी ने कहा, "प्रेम, आकाश को प्रकाशित करता है।" यह कैनी के गीत के शीर्षक, "लाइट अप द स्काय" के सन्दर्भ में था।

"मुझे यह जानकर अपार कृतज्ञता का अनुभव हुआ कि श्रीगुरु का प्रेम सदैव मेरे साथ है और वह प्रेम अहैतुक है। यह एक आधार स्तम्भ है।"

"आज सुबह, जन्मदिन महोत्सव सत्संग में जब गुरुमाई जी ने सभी को उनकी ओर से एक-दूसरे को शुक्रिया अदा करने के लिए कहा, तो सभी लोग एक-दूसरे को धन्यवाद देने लगे और श्री निलय में लोगों ने एक-दूसरे के पास जाकर, यहाँ तक कि गले लगाकर भी आभार व्यक्त किया। इस प्रकार गले लगाने के द्वारा, दिए गए प्रेम को मैं महसूस कर पा रहा था।"

मुझे प्रेम है मेरी देह में होने वाले प्रेम के एहसास से, और उससे जिस तरह मेरा हृदय नम हो जाता है।

"आज जब स्वामीगण इन्द्रदेव के लिए मन्त्रों का स्तुतिगान कर रहे थे, मैंने अनुभव किया, मानो स्वर्ग धरती पर उतर आया हो। और फिर जब हमने गुरुमाई जी के साथ ॐ नमो भगवते मुक्तानन्दाय का नामसंकीर्तन किया, मुझे लगा, 'गुरुमाई जी, स्वर्ग को धरती पर ले आती हैं।' उस क्षण, मुझे असीम प्रेम का अनुभव हुआ।"

"आज सुबह गुरुमाई जी, बड़े बाबा की पादुकाओं पर फूलों की पँखुड़ियाँ अर्पित कर रही थीं। ऐसा करते हुए वे कह रही थीं, 'बारिश, बारिश, बारिश।' मुझे आशीषों का अनुभव हुआ — संसार को गुरुमाई जी के आशीर्वाद मिल रहे थे। बाद में, जन्मदिन सत्संग के दौरान, जमकर बरसात हुई। और आज सन्ध्या के समय जब गुरुमाई जी मन्दिर में प्रवेश कर रही थीं, तो पुनः खूब बारिश हुई। आज का पूरा दिन, श्रीगुरु की कृपा में, प्रकृति के विपुल प्रेम में भीगा रहा।"

जब यह ये सेवाकर्ता अनुभव बाँट रहे थे तभी बाहर मेघ गरजने लगे। मानो इन अनुभवों के प्रतिउत्तर में, वर्षा की बूँदें मन्दिर की छत पर नृत्य करने लगीं हों।

ऐसा लग रहा था, मन्दिर में इतनी देर तक सत्संग चलते रहने का एक कारण है, बारिश। जब तक बारिश होती रही, सत्संग चलता रहा। और जैसे ही लगा कि बारिश, थमने वाली है और अब सत्संग का भी समापन हो जाएगा, तभी बारिश फिर से शुरू हो गई।

हम सब आनन्दित हो गए जब गुरुमाई जी ने एक बहुत पुरानी सिद्धयोगी एवं अनुभवी संगीतकार व संगीत शिक्षिका, लक्ष्मी वैल्स को 'गुरु ॐ' की धुन गाने के लिए कहा। १९९० के दशक में, गुरुमाई जी के निवेदन पर लक्ष्मी जी ने 'गुरु ॐ' की धुन, शिवभैरव राग में संगीतबद्ध की थी। गुरुमाई जी के निर्देशानुसार वे वर्षों तक गुरुदेव सिद्धपीठ में, श्रीगुरुगीता के दैनिक स्वाध्याय से पूर्व, इसे गाया करती थीं।

अधिकांश सिद्धयोगी, लक्ष्मी जी की स्वर्णिम आवाज़ से परिचित हैं। जैसे ही उन्होंने गाया तो उनकी आवाज़ और संगीतात्मकता की मधुरता व शक्ति ने, पूरे जन्मदिन महोत्सव के दौरान हमारे अन्दर से उमड़ रहे प्रेम को एक आकृति प्रदान कर दी। हमने महसूस किया कि लक्ष्मी जी के गायन के माध्यम से, हम गुरुमाई जी को उनके जन्मदिन पर अपने प्रेम का उपहार अर्पित कर रहे थे।

जब लक्ष्मी जी की आवाज़, श्रीगुरु के प्रति उनके प्रेम व भक्ति को अभिव्यक्त करती मन्दिर में सर्वत्र गुँजायमान हो रही थी तब सिद्धयोग सत्संग की परम्परानुसार, हम लोग खड़े होकर बड़े बाबा के दर्शन हेतु आगे आए।

बाद में एक प्रतिभागी ने दर्शन का अपना अनुभव बाँटते हुए कहा :

> जब मैं बड़े बाबा के दर्शन हेतु उनके सम्मुख गया, तो प्रेम की एक लहर मुझमें हिलोरें लेने लगी। अश्रुओं से मेरी आँखें भर आईं। जब मैंने गुलाब की पँखुड़ियों से ढँकी, मृदुल और सुगन्धित, चाँदी की पादुकाओं पर अपना सिर रखा, तो मुझे बड़े बाबा में और अपने अन्तर में, दिव्य प्रेम के रूप में दिव्यता की उपस्थिति की अनुभूति हुई।

जिस तरह सूर्य की अन्तिम किरण, मन्दिर पर चहुँ ओर अपनी मन्द-मन्द आभा बिखेर रही थी इसी तरह दर्शन समापन की ओर था। मन्दिर में सेवा अर्पित करने हेतु कुछ सेवाकर्ता वहीं ठहर गए थे। उस समूह के लोगों को गुरुमाई जी ने बड़े बाबा के आस-पास अर्धचन्द्राकार रूप में खड़े होने के लिए कहा और फिर गुरुदेव हमारा प्यारा भजन गाने के लिए आमन्त्रित किया।

हम लोग एक दूसरे के समीप कंधे से कंधा मिलाकर खड़े थे, हमारी आँखों में एक चमक थी; हमारे पास एक और सुअवसर था, इस संसार में हरेक के लिए एक संकल्प बनाने का कि वे शान्ति व सद्भावना को यथार्थ रूप प्रदान करने हेतु आवश्यक कदम उठा सकें। हमने एकता का अनुभव किया, तथा हमने एक इकाई के रूप में गाया।

गुरुदेव हमारा प्यारा! है जीवन को आधार।

अपनी परमप्रिय गुरुमाई जी के साथ, उनके जन्मदिन पर, मन्दिर में बड़े बाबा के लिए यह प्रार्थना गाना, सोने पर सुहागे के समान था। यह कितना हर्षोल्लास से परिपूर्ण दिन रहा! उषाकाल के समय आराधना हुई, दोपहर कृपा व आशीषों से सराबोर रही, सन्ध्याकाल में पूजा-अर्चना हुई। और पूरा दिन हास्य से

भरा रहा — गुरुमाई जी की हँसी, प्रतिभागियों की हँसी, स्वर्गलोक की हँसी, प्रकृति की हँसी। ये समस्त हँसी किसलिए? निस्सन्देह, प्रेम।

गुरुमाई जी का जन्मदिन, २४ जून, २०१८ — हिलोरें लेती चिति, सूर्योदय से सूर्यास्त तक — हमारे हृदयों पर एक अमिट छाप छोड़ गया। यह इस बात को प्रदर्शित करता है कि कैसे एकसाथ मिलकर कार्य करने से, प्रेम के महिमापूर्ण महोत्सव की रचना होती है।

सद्गुरुनाथ महाराज की जय!
सद्गुरुनाथ महाराज की जय!
सद्गुरुनाथ महाराज की जय!

© २०१८ एस. वाय. डी. ए. फ़ाउन्डेशन®। सर्वाधिकार सुरक्षित।